ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 48, अंक 16 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 फरवरी, 2025 से रविवार 16 फरवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 — सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 201वें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

उत्साह एवं भव्यता से मनाया 200वां वर्ष - अब 300 की करें तैयारी

201वीं जयन्ती पर हम करते हैं शत-शत नमन तुम्हें

हे ! सत्य के प्रकाशक, हे ! महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रत्येक मनुष्य का जन्म और जीवन दो अलग-अलग परिस्थितियां हैं। जन्म कहां होगा, माता-पिता किस मत के मतावलंबी होंगे, किस संस्कृति और संस्कारों के अनुयाई होंगे, घर की परिस्थितियां कैसी होंगी, वातावरण कैसा मिलेगा आदि, ये सारी बातें अनुकूल हों या प्रतिकूल किसी के अपने हाथ में नहीं होती। क्योंकि ईश्वरीय कर्मफल सिद्धांत के अनुसार पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों के अनुसार ही आत्मा को साधारण या असाधारण स्थान और माता-पिता के यहां जन्म मिलता है।

यह सर्व विदित है कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म 12 फरवरी सन् 1824 को टंकारा, गुजरात में एक सुसंपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। माता-पिता अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के होने के साथ ही शिव भक्त मूर्तिपूजा थे, उन्होंने अपने पुत्र का नाम मूलशंकर रखा और उसको शिव भक्त बनाने का पूरा प्रयास किया। लेकिन बालक मूलशंकर अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के थे और उनका जिज्ञासु मन अपने आप में सोने पर सुहागा सिद्ध हुआ था। शिवरात्रि पर उपवास और पूजा के दौरान रात्रि जागरण जागरण करते हुए उन्होंने शिव की पिंडी पर चूहों की उछल-कूद को देखकर विचार किया कि जो कैलाशपति शिव शंकर इन नन्हे चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह सारे संसार को उत्पन्न, पालन पोषण और संहार करने वाला कैसे हो सकता है? यह जिज्ञासा उनके कोमल मन पर एक अमिट छाप बन गई और वे सच्चे शिव की खोज में अपना सर्वस्व त्याग कर घर से निकल पड़े। इस दौरान उन्होंने गहन जंगलों में, अनेक गांवों, शहरों में, पहाड़ और पर्वतों पर नदियों के किनारे खूब भ्रमण किया, अनेक साधु, संतों से मिले, लेकिन उनकी जिज्ञासा शांत होने के बजाए एक गहरी पिपासा के रूप में परिवर्तित होती गई, सन 1860 में वे मथुरा में गुरु विरजानंद जी की शरण में गए और 3 वर्ष तक आर्ष पाठ विधि से शिक्षा ग्रहण करके 1863 में गुरु दक्षिणा के रुप में अपना पूरा जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित करते हुए संसार में फैले हुए अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखण्ड और अंधविश्वास के तिरोभाव हेतु ईश्वर की अमृत वाणी वेदों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो गए। गुरु विरजानंद जी के पास जाने से पूर्व ही आप संन्यास की दीक्षा लेकर मूलशंकर से महर्षि दयानंद सरस्वती के रूप में विख्यात हो गए थे।

संपूर्ण मानवजाति पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी के इतने अनगिनत उपकार हैं, कि हम जन्म जन्मांतरों तक भी उन्हें पूरी तरह से चुका नहीं सकते, जब हम उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व पर चिन्तन करते हैं तो ज्ञात होता कि महर्षि कैलाश पर्वत के सामान विशाल, विराट और अडिग थे, महर्षि को दुनिया का कोई पद, प्रतिष्ठा, धन, संपदा का प्रलोभन डिगा नहीं पाया, सारा जमाना उनका विरोधी था लेकिन उनके अदभुत धैर्य को, उनके उद्देश्य प्राप्ति के संकल्प को कोई हिला नहीं पाया, हर तरह के आंधी तूफान उनके सामने आए और चले गए, किन्तु महर्षि के सत्य के प्रकाश की शक्ति के सामने कोई टिक नहीं पाया, क्योंकि महर्षि दयानंद सच्चे ईश्वर भक्त थे, राष्ट्र के सच्चे उपासक थे, वैदिक धर्म के मसीहा थे, मानवता के पुजारी थे, वे प्रेम करुणा की प्रति मूर्ति थे, महान धर्मात्मा और दयालु थे, महर्षि जब तक जिए परोपकार के लिए जिए और जब 30 अक्टूबर 1883 को दीपावाली की संध्या बेला में संसार से विदाई ली तब अपने हत्यारे को अभयदान देकर एक नई मिसाल कायम कर गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी को उनके 201वें जन्मोत्सव पर शत-शत नमन।

- शेष पृष्ठ 7 पर

चलो मुम्बई! — चलो मुम्बई!! — चलो मुम्बई!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा

आर्यसमाज का 150वाँ स्थापना दिवस समारोह

29-30 मार्च, 2025 (शनि-रवि) : सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई

★ आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।
★ सभी अभ्यागतों हेतु पंजीकरण अनिवार्य है।
★ कृपया अपना पंजीकरण अवश्य कराएं।

www.aryasamajmumbai150years.com/registration/
www.aryasamajofficial.com
Whatsapp : 8422891578 / 9152137937 / 8657017952
Instagram: www.instagram.com/aryasamaj.official/
Face Book : facebook.com/profile.php?id=61572694295500

150वें स्थापना दिवस समारोह में दिल्ली एवं उत्तर भारत से सम्मिलित होने वाले आर्य महानुभावों के लिए यात्रा कार्यक्रम पृष्ठ 8 पर प्रकाशित है

देववाणी-संस्कृत

सरस्वती-माता-ज्ञानदेवी बड़े भारी ज्ञान-समुद्र को प्रकाशित करती है

वेद-स्वाध्याय

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुआ। धियो विश्वा वि राजति।।
-ऋ० 1।3।12
ऋषिः-मधुच्छन्दाः।। देवता-सरस्वती।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ-सरस्वती = ज्ञानदेवी **केतुना** = ज्ञान द्वारा, प्रज्ञापक शक्ति द्वारा **महः अर्णः** = बड़े भारी ज्ञान-समुद्र को **प्रचेतयति** =प्रकाशित करती है और **विश्वा धियः**= सब प्रकाशित बुद्धियों को **विराजित** = विशेषतया दीप्त करती है।

विनय- ज्ञान की सच्ची जिज्ञासा होते ही यह अनुभव होने लगता है कि अरे, संसार में तो बड़ा ज्ञान है; एक से एक अद्‌भुत विद्या है; जिस विषय में देखो उसी विषय में ज्ञान पाने का इतना क्षेत्र है कि मनुष्य कई जन्मों में भी उसका पार नहीं पा सकता। तब दीखता है कि मनुष्य के सामने न जाने हुए ज्ञान का एक अनन्त समुद्र भरा पड़ा है। यह देखनेवाले मनुष्य नम्र हो जाते हैं, उन्हें ज्ञान का अभिमान नहीं रहता। ऐसे ही मनुष्य सरस्वती देवी की शरण में जाते हैं। सरस्वती देवी के झण्डे के नीचे आनेवालों को सबसे पहले तो यही पता लगा करता है कि ज्ञेय अनन्त है, हमारे ज्ञातव्य संसार का पार नहीं है और हम तुच्छ लोग तो अपनी क्षुद्र इन्द्रियों और बुद्धि को लिये हुए इसके एक किनारे खड़े हैं। विद्यादेवी पहले तो इस बड़े भारी समुद्र को ही हमारे लिए प्रकाशित करती है; इसके पार तो पीछे पहुँचाती है। पहले हमें यह अनुभव होना चाहिए कि ज्ञेय अनन्त है। ज्ञान की अनन्तता तो हमें पीछे दीखेगी। सरस्वती देवी जिधर-जिधर अपने ''केतु'' को ले-जाती है, अर्थात् जिधर-जिधर अपनी प्रज्ञापक शक्ति को फिराती है, वहाँ-वहाँ पता लगता जाता है कि अरे, यह भी एक बड़ा उत्तम ज्ञेय-क्षेत्र है, यह भी एक बड़ा भारती ज्ञेय-क्षेत्र है। एवं, हरेक क्षेत्र को हमारे लिए जगाती जाती है और फिर सब बुद्धियों को विशेषरूप से दीप्त भी करती जाती है, अर्थात् जिस-जिस वस्तु की गहराई में जाकर हम जानना चाहते हैं, उस-उस वस्तु के तत्त्व का, उसके सच्चे स्वरूप को भी हमारे लिए चमका देती है। तब हम जिस विषयक बुद्धि पाना चाहें उसी विषय के ज्ञान की यह देवी हमारे लिए प्रदीप्त कर देती है। तभी अनुभव होता है कि सभी बुद्धियों में वही देवी प्रदीप्त हो रही है, वही चमक रही है, सर्वत्र उसी का राज्य है। सरस्वती देवी के सच्चे स्वरूप का या ज्ञान के आनन्त्य का (जिसके सामने ज्ञेय कुछ नहीं होता) अनुभव उसी अवस्था में पहुँचने पर होता है।

-:साभार:- **वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कुंभ में दिवंगत आत्माओं को आर्यसमाज की विनम्र श्रद्धांजलि

क्या कुम्भ की भगदड़ में मृत्यु होना भी मोक्ष है?

शास्त्रों के अनुसार यह मनुष्य जीवन चार उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए है- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ये पुरुषार्थ चतुष्टय कहलाते हैं। इनका वर्णन वेदों में पाया जाता है। इन चारों का आपस में गहरा संबंध रखते हैं। धर्म का अर्थ है वे सभी कार्य जो आत्मा व समाज की उन्नति करने वाले हों। अर्थ से तात्पर्य है किसी अच्छे कलात्मक कार्य द्वारा धनार्जन करना। काम का अर्थ है जीवन को सात्विक व सुख-सुविधासंपन्न बनाना। मोक्ष का अर्थ है आत्मा द्वारा अपना और परमात्मा का दर्शन करना। मोक्ष के लिए महर्षि पतंजलि ने अपने ग्रंथ योगसूत्र में अष्टांग योग दिया है, यानि मोक्ष तक जाना है तो मनुष्य को अष्टांग योग अपनाना चाहिए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने भी अपने ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में अष्टांग योग के बारे में वर्णन किया है। गीता में भी योग और मोक्ष के बारे में वर्णन है कि जब आत्मा पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त हो जाये, आत्मा अपनी यात्रा का अंत करते हुए ईश्वर के सानिध्य में विलीन हो जाये, तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

महाकुंभ में हुई दुखद भगदड़ के बाद इन दिनों देश में मोक्ष को लेकर बवाल मचा हुआ है। बागेश्वर धाम, धीरेंद्र शास्त्री ने हाल ही में एक बयान दिया था कि महाकुंभ भगदड़ में जो लोग मारे गए हैं, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई है। उनके इस बयान ने बहुत सुर्खियां बटोरी थी। अब इस पर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद का जवाब आया है। शंकराचार्य ने कहा कि मोक्ष की प्राप्ति ऐसे नहीं होती। उन्होंने कहा कि जब लोग संकल्प लेकर प्राण त्यागते हैं, तब मोक्ष मिलता है; बिना संकल्प के मौत हो जाने से मुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसे में सवाल बन जाता है कि सोचकर प्राण त्यागने से मोक्ष मिलता है या किसी धार्मिक उत्सव स्थल या नदी किनारे मची किसी भगदड़ में भी मोक्ष मिल जाता है? आखिर यह मोक्ष की संकल्पना कहां से और क्यों सनातन धर्म में मोक्ष को अंतिम मंजिल माना गया?

मोक्ष, यानी एक ऐसा शब्द या ऐसी इच्छा जो मृत्यु के पश्चात केवल सनातन धर्म में मिलती है। दुनिया के किसी मत में आत्मा के लिए ऐसी सर्वोच्च कल्पना संसार भर में फैले किसी मत सम्प्रदाय में नहीं मिलेगी। हाँ, सनातन धर्म से निकली बौद्ध, जैन तथा सिख शाखाएं भी मोक्ष की इच्छा से दूर नहीं जा सकी। यानी बुद्ध की मृत्यु निर्वाण, गुरुनानक जी की मृत्यु को ज्योति-ज्योत और महावीर की मृत्यु को कैवल्य कहा गया। निर्वाण, यानी आत्मा के बंधन से मुक्ति, चरम स्वतंत्रता की अवस्था। ज्योति-ज्योत, जो शाश्वत प्रकाश में डूबा हुआ हो, और कैवल्य, यानी केवल स्वयं का होना; पर, दूसरा शेष नहीं रहा। जैसे एक मनुष्य है; वह किसी के लिए पुत्र, किसी का भाई, किसी का पिता, किसी के लिए नौकर और किसी का मालिक हो सकता है। किंतु वस्तुतः वह इंसान एक ही है। ठीक ऐसे ही मोक्ष, निर्वाण, ज्योति-ज्योत, और कैवल्य- ये शब्द अलग-अलग हैं, किंतु अर्थ में मोक्ष ही है।

ऐसे में प्रश्न हो सकता है कि मोक्ष जैसा शब्द विचार आया कहां से? असल में सनातन धर्म के ग्रंथों ने जीवन के चार उद्देश्य बताए हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें से मोक्ष परम अथवा "परम पुरुषार्थ" कहा गया है। मोक्ष की प्राप्ति का उपाय आत्मतत्व या ब्रह्मतत्व का साक्षात् करना बतलाया गया है। न्यायदर्शन के अनुसार दुःख का नाश ही मोक्ष है।

मोक्ष को कई तरीकों से समझ सकते हैं। जब 'मैं' का भाव आ जाता है। इसी "मैं" से समस्त महत्वाकांक्षाएं जन्म लेने लगती हैं। महत्वाकांक्षाएं कामनाओं को जन्म देती हैं, और जब कामनाएं पूर्ण न हों, तो वे दुख में ले जाती हैं। बस ऋषि-महर्षि इसी झूठे 'मैं' से छुटकारा दिलाने के लिए साधना का मार्ग बताते हैं। यानी मोह का क्षय मोक्ष, यही निर्वाण है। जहाँ सब दुखों से निवारण होता है, परम शांति व आनंद की उपलब्धि होती है। कैवल्य, यानी दूसरा शेष नहीं रहा। ज्योतिजोत हो गया जो था, वो प्रकाश में मिल गया; न सुख की अनुभूति बची, न दुःख का अहसास बचा। सबसे परे चले जाना ही मोक्ष हो जाना कहते हैं।

किन्तु मर जाना मोक्ष नहीं है, जैसे बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री ने हाल ही में एक बयान दिया था कि महाकुंभ भगदड़ में जो लोग मारे गए हैं, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई। अगर ऐसे मोक्ष मान लिया जाये तो संसार के सभी जीवों की मृत्यु होती है, तो क्या सबको मोक्ष मिल जाता है?

मर जाना मोक्ष नहीं है। आमतौर पर जन्म सबको प्यारा होता है और मृत्यु से सबको भय लगता है। संसार के दुःखमय स्वभाव को स्वीकार भी किया गया है। और इससे मुक्त होने के लिए कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता अपनाया गया है। मोक्ष इस तरह के जीवन की अंतिम परिणति है। इसे पारलौकिक मूल्य मानकर जीवन के परम उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। जिसके सुख-दुःख के भावों का विनाश हो गया हो, वह देह त्यागने के बाद आवागमन के चक्र से सर्वदा के लिए मुक्त हो जाता है। उपनिषदों में आनन्द की स्थिति को ही मोक्ष की स्थिति कहा गया है, क्योंकि आनन्द में सारे द्वंद्वो का विलय हो जाता है।

देखा जाये तो शास्त्रों के अनुसार यह मनुष्य जीवन चार उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए है- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ये पुरुषार्थ चतुष्टय कहलाते हैं। इनका वर्णन वेदों में पाया जाता है। इन चारों का आपस में गहरा संबंध रखते हैं। धर्म का अर्थ है वे सभी कार्य जो आत्मा व समाज की उन्नति करने वाले हों। अर्थ से तात्पर्य है किसी अच्छे कलात्मक कार्य द्वारा धनार्जन करना। काम का अर्थ है जीवन को सात्विक व सुख-सुविधासंपन्न बनाना। मोक्ष का अर्थ है आत्मा द्वारा अपना और परमात्मा का दर्शन करना। मोक्ष के लिए महर्षि पतंजलि ने अपने ग्रंथ योगसूत्र में अष्टांग योग दिया है, यानि मोक्ष तक जाना है तो मनुष्य को अष्टांग योग अपनाना चाहिए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने भी अपने ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में अष्टांग योग के बारे में वर्णन किया है। गीता में भी योग और मोक्ष के बारे में वर्णन है कि जब आत्मा पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त हो जाये, आत्मा अपनी यात्रा का अंत करते हुए ईश्वर के सानिध्य में विलीन हो जाये, तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

अब अगर हम इसे और भी सरल भाषा में समझें, तो जब दुःख और सुख से मनुष्य ऊपर उठ जाए, जब मन में लालच, अहंकार, लोकेंष्णा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा और उत्तैष्णा से भी परे हट जाए। यानि जब पूरा अस्तित्व आनंद में डूब जाए, तो स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसे भी मोक्ष की संज्ञा दी है। कुछ लोग कह सकते हैं कि मनुष्य सुख और दुःख से कैसे परे जा सकता है, यह तो ईश्वर के अधीन है। तो ऐसा नहीं है, क्योंकि ईश्वर न किसी को सुख देता न दुःख; यह ईश्वर का काम नहीं है। सुख हो या दुःख, यह मनुष्य के मन की रचना है और कर्मो का फल है मनुष्य के अनुभव का हिस्सा है, वह किस परिस्थिति में दुःख का अनुभव करता है और किस परिस्थिति में सुख का।

इसलिए हमारे शास्त्रों ने मोक्ष को अंत में रखा। यानि जब धर्म, अर्थ, काम से मुक्त जाए, शास्त्र भी छूट जाएं, शब्द भी छूट जाएं। जब पता ही न रहे कि हम कौन हैं। कोई पहचान न हो, कोई पता न हो, कुछ छोड़ने को न रहे, कुछ पकड़ने की इच्छा ही न रहे, अपेक्षा और उपेक्षा न रहे। तब मोक्ष का अनुभव होता है। इसलिए स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने कहा है कि कर्म उपासना से मृत्यु को जीतकर विद्या अर्थात ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त करना है। न कि खुद को कष्ट देकर, खुद को तड़पा कर या भीड़ में दम घुटकर मारा जाना मोक्ष है?

-संपादक

स्वास्थ्य चर्चा

प्रकृति के साथ रहें, आहार का ध्यान रखें और स्वस्थ रहें

इस अखण्ड ब्रह्माण्ड में तीन तत्त्व ही प्रमुख हैं- ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर सम्पूर्ण जगत का नियन्ता, जीव भोक्ता तथा प्रकृति भोग्य पदार्थ है। ईश्वर सृष्टि के कण-कण में समाया हुआ है। सम्पूर्ण प्रकृति ईश्वर का गुणगान करती है और जीवमात्र का पालन-पोषण करती है। मानव जीवन की यात्रा सुखद, सुगम हो इसके लिए उसे प्रकृति की अवेहलना नहीं करनी चाहिए।

प्रकृति और मानव देह का जन्मजात संबन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसी के विशाल प्रांगण में क्रीड़ा करते-करते एक दिन नया जन्म लेकर प्रकृति की गोद में सो जाता है। प्रकृति का यह विधान अटल है कि जो जीव उसकी उपेक्षा करता हैं वह उसको दण्डित अवश्य करती है। प्रकृति रूपी अमृत प्रसाद को ग्रहण करने के लिए जीव को सजग एवं सावधान जरूर रहना पड़ेगा। क्योंकि स्वस्थ जीवन अथवा किसी भी प्रकार की पीड़ा के बिना औषध ग्रहण किए प्रसन्नचित, स्वस्थ रहना ही कुशलता है।

आश्चर्यजनक बात यह है कि सब कुछ जानते हुए भी लोग शरीर का ध्यान नहीं रखते। ईश्वर ने मानव को देह-रूपी अनमोल तथा अनुपम यन्त्र दिया है। किन्तु इसके बारे में हम सदैव लापरवाही बरतते हैं। शरीर रूपी यन्त्र को प्रकृति के संसर्ग की कितनी आवश्यकता है यह जानना अति आवश्यक है। आज का मानव उचित आहार-विहार के अभाव में रुग्ण होकर स्वास्थ्य की अवहेलना करते हुए अल्पायु में ही संसार को त्यागकर चल देता है अथवा यूं भी कह सकते हैं कि उसकी असावधानी को प्रकृति बर्दाश्त नहीं करती और दण्डित कर देती है।

रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी-पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।

रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी-पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।

रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-कॉफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।

इंसान को पशु-पक्षियों के सहज जीवन से बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। वे बीमार होने पर प्रकृति का सहारा लेकर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। लेकिन संसार का सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी मानव विज्ञान के इस आधुनिक युग में अपनी प्राचीन शुद्ध-सात्त्विक ईश्वर द्वारा निर्देशित दिनचर्या को न अपनाकर रोगों को बढ़ा रहा है और बढ़ते हुए रोग समाज के लिए चिन्ता जनक हैं।

यदि मनुष्य अपने विचारों, इच्छाओं अथवा कार्यों से प्रकृति के सामंजस्य को बिगाड़ता है तो उसके पुनः परिणाम का दायित्व भी उसी का होता है। प्रकृति उपासक को पुरस्कृत करती है और अवहेलना करने वाले को दण्ड देती है। नियम के अनुसार हम स्वयं ही अपने आपको पुरस्कृत या दण्डित करते हैं।

जीवन में जो कुछ भी घटित होता है और विशेषकर जो दुःखद होता है, उसके लिए लोग प्रायः भाग्य को ही कारण मानते हैं। लेकिन सब कुछ दृश्य या अदृश्य ज्ञात अथवा अज्ञात नियमों का परिणाम मात्र है। दुःखद परिणाम इस सच्चाई का संकेत हैं

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे -

महाभारत में भीष्म पितामह ने मृत्यु शय्या पर पूछा—सूर्य उत्तरायण में है या दक्षिणायन में? जानने के बाद अपनी मृत्यु के लिए उन्होंने 'उत्तरायण' की प्रतीक्षा की।

गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त (ग्रेविटी), अणु और परमाणु (कण विद्या)-(एटम साइंस), सूर्य विद्या (सोलर सिस्टम), भूचुम्बकत्व (मैग्नेटिक्स ऑफ अर्थ) यानि अगर चुम्बक को हवा में टांगें तो वह उत्तर-दक्षिण (नॉर्थ-साउथ) की गति में ठहरती है, यह विद्या भारत के लिए कोई नई नहीं थी बल्कि हमारे यहां प्राचीनतम समय से निरन्तर उपयोग होती चली आ रही है। प्रकाश की गति का मान (स्पीड ऑफ लाइट), अलग-अलग प्रकार की बिजली, बिजली को संजोकर रखने की बैट्री, अत्यधिक दूरी पर तेज गति से जाने की क्षमता वाले प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) का हमारे यहां पूर्ण उपयोग होता था। 'तीर' आखिर किसे कहा जाता था। तीर मिसाइल ही तो थी और उनकी अलग-अलग प्रकार की विशेषताएं और क्षमताएं थी। केवल विध्वंसक कार्यों में नहीं, जनुपयोगी कार्यों में भी, जैसे पृथ्वी से जल निकालने आदि के लिए जलास्त्र का प्रयोग किया जाता था।

रस विद्या यानि रसायन विद्या (कैमिकल साइंस) तो हमारी विशेषता रही है। भोजन बनाना भी आयुर्वेद का विषय है। रसायनों की विद्या की जानकारी तो हमारी हर गृहिणी को पर्याप्त थी और इसी कारण ही तो इस भोजन बनाने के स्थान को 'रसोई' ही कहा जाता है। नमक (साल्ट प्रोडक्शन) ऐसिड बेस्ड अलग-अलग प्रकार के नमक (साल्ट) आदि का विस्तृत विज्ञान हमारे यहां मौजूद रहा और मानव के हित में इसका पूर्ण उपयोग भी होता रहा।

रंगों के निर्माण की विद्या—ऐसे रंगों का निर्माण जो एक बार दीवार पर कर दिया जाए तो लाखों सालों तक फीके न पड़ सकें—मध्य प्रदेश की भीम भेंटका आदि अनेक गुफाओं में बनी तस्वीरें इसकी प्रमाण हैं जो कि लगभग 40 हजार वर्ष पुरानी हैं। विश्व में अनेक स्थानों पर ऐसी गुफाएं मौजूद हैं जिनमें ऐसे रंगों से बनी कलाकृतियों को लाखों साल पहले का बताया जाता है।

शिल्पकला, वास्तु कला, वास्तुशास्त्र (आर्चिटैक्चर) की कला की जनक भी भारत भूमि ही रही। एक ही पहाड़ को काटकर पांच-छह-दस मंजिला भवन तैयार कर देना, जैसे—अजन्ता और ऐलोरा में है, क्या विश्व में कहीं और है? जयपुर का हवामहल जैसे भारत के हजारों शानदार भवन क्या अंग्रेजी वास्तु कला और शिल्पकला से बने? विश्व के सबसे प्राचीन और व्यवस्थित भवन यदि आज भी पूरी तरह सुरक्षित और उपयोगी हैं तो वे केवल भारतीय प्राचीन शिल्पकला का और वास्तु शास्त्र का उपयोग करके ही हैं जो भारत में ही हैं अन्य कहीं नहीं।

चाहे स्टील निर्माण की बात हो, चाहे कांच निर्माण की कला, चाहे धातु विद्या, चाहे रत्न विज्ञान, और चाहे ऐसे ईंधन (फ्यूल) का निर्माण जिनसे प्रदूषण न होता हो, की विद्याएं भारत में ही सृजित हुई हैं। फिर चाहे हम बात करें विश्व प्रसिद्ध 'योग विद्या' की जिसमें समस्त शरीर और आत्मा को प्रत्येक प्रकार से स्वस्थ रखने की क्षमता हो, ये सब विश्व को वेद विद्या के ज्ञाता भारत के ऋषियों की ही तो देन हैं। 'प्राणायाम विद्या' जो शरीर के प्राण तन्त्र (श्वसन तन्त्र) को पूरी तरह से व्यवस्थित करने में पूर्ण सक्षम थी, इसकी जानकारी हमें किसने दी? औषधि निर्माण की विद्या की बात हो या सूक्ष्म विज्ञान (माइक्रो बायोलॉजी), जीवाणु विज्ञान (बैक्टीरियालॉजी) लाभदायक और हानिकारक बैक्टीरिया में अन्तर, शल्य चिकित्सा (सर्जरी) प्लास्टिक सर्जरी, यन्त्र विज्ञान आदि की जानकारी और प्रयोग भारत में आम था।

आकाशीय तरंग विद्या आदि जैसी अनेकों-अनेक विद्याएं जो मानव जाति की प्रत्येक जरूरत को पूर्ण करने के लिए सक्षम थी, उनका पूर्ण प्रचार और उपयोग भारत में था।

- क्रमशः

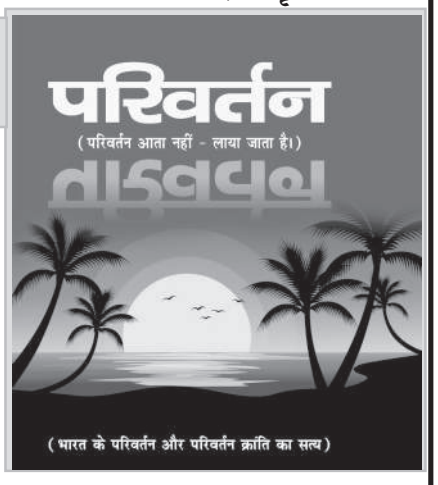

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

10 फरवरी, 2025
से
16 फरवरी, 2025

प्रयागराज कुम्भ में प्रचार : आर्य समाज की विशाल शोभायात्रा बनी आकर्षण का केंद्र

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी और प्रयागराज के आर्य वीर, वीरांगना और आर्यजनों की रही प्रशंसनीय भागीदारी

ऋषि मुनियों की पुण्यभूमि भारत में समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने नव जागृति का संदेश देकर मानवजाति को उपकृत किया है। इस क्रम में 19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती जी का स्थान अग्रणी है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने उस समय की संपूर्ण विषम परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हुए वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार, प्रसार और विस्तार के साथ-साथ राष्ट्र और मानव सेवा का जो शंखनाद किया था, उसे आर्य समाज निरन्तर आगे बढ़ा रहा है। वर्तमान में आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर पूरे भारत और विदेशों में अनेकानेक आयोजन उमंग, उत्साह से समारोह पूर्वक संपन्न हो रहे हैं।

इसी क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के त्ववावधान में आर्य समाज मुंडेरा बाजार, प्रयागराज द्वारा 13 जनवरी 2025 से प्रयागराज में विश्व के ऐतिहासिक और विशाल महाकुम्भ मेले में आवासीय शिविर का भव्य आयोजन किया। जिसमें पूरे भारत से आर्य समाज के अनेक विद्वान, संन्यासी, अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे, वहां प्रतिदिन प्रात: सायं हवन, सत्संग और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं तथा आर्य समाज के प्रचार प्रसार की प्रेरक गतिविधियां चल रही हैं।

यह सर्वविदित ही है कि सन 1867 में महर्षि दयानंद जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में " पाखण्ड खंडिनी पताका" फहराते हुए वेद विद्या को आधार बनाकर समाज में व्याप्त अनेकानेक कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास को दूर भगाने का बिगुल बजाया था।

प्रयागराज में आयोजित होने वाले इस महाकुंभ में महर्षि का पुण्य स्मरण करते हुए 6-7 फरवरी 2025 को सार्वदेशिक आर्य वीर, वीरांगना दल द्वारा वैदिक धर्म, संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हुए धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा हेतु विशाल शोभा यात्रा निकली गई, जिसमें आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, लखनऊ, कानपुर, बनारस और प्रयाग राज के आर्य वीर वीरांगनाओं ने बढ़-चढ कर हिस्सा लिया, कुम्भ में सेक्टर 6 से प्रारंभ होकर आर्यों की यह विशाल शोभा यात्रा जिसमें महर्षि दयानंद की जय, आर्य समाज अमर रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे, भारत माता की जय, वंदे मातरम् के गगन भेदी नारों से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा, सबके हाथ में ओम के झंडे थे, गले में पीत वस्त्र और सिर पर केसरिया टोपी पहने स्त्री, पुरुष, क्षेत्रीय युवा और बच्चों की भीड़ सबको आकर्षित कर रही थी।

- शेष पृष्ठ 6 पर

महामन्त्री विनय आर्य पहुंचे आर्ष गुरुकुल आश्रम कोसरंगी एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना

स्वामी धर्मानन्द जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देकर आशीर्वाद लिया और गुरुकुलों के बच्चों से किया संवाद

महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज की सबसे बड़ी धरोहर गुरुकुलों को माना जाता है। गुरुकुलय शिक्षा प्रणाली आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को निरंतर आगे बढ़ने का कार्य करती है। पूरे भारत में अनेक गुरुकुल आर्य समाज की उन्नति में अपना अनमोल योगदान दे रहे हैं। आर्य समाज के गुरुकुलों की बड़ी श्रृंखला में स्वामी धर्मानंद जी द्वारा स्थापित और उनके आशीर्वाद से संपोषित आर्ष गुरुकुल आश्रम कोसरंगी, छत्तीसगढ़, गुरुकुल आश्रम आमसेना उडीसा का अपना अनुपम स्थान है। अभी पिछले दिनों 7 फरवरी 2025 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, कोर कमेटी के सदस्य श्री विनय आर्य जी उपरोक्त गुरुकुल में पहुंचे और वहां की संपूर्ण व्यवस्थाओं को आपने ध्यान से देखा तथा प्रसन्नता व्यक्त की। आपने गुरुकुल आश्रम आमसेना पहुंचकर स्वामी धर्मानन्द जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी और आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर गुरुकुल परिसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर सामूहिक यज्ञ का आयोजन भी किया गया। गुरुकुल आमसेना आश्रम के प्रधान कै. रुद्रसेन जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज सिंधु जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री, राजस्थान सभा के मन्त्री आचार्य जीववर्धन शास्त्री जी एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री आर्य दुष्मंत स्वाईं जी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य ने दोनों गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों और निष्ठावान अध्यापकों की उपस्थिति में गुरुकुल के आचार्य श्री मुकेश जी को गुरुकुल के सुन्दर संचालन के लिए बधाई देते हुए सभी ब्रह्मचारियों से विशेष चर्चा की। जिसमें आपने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी एवं अन्य महापुरुषों के जीवन से जुड़े हुए घटनाक्रम और देश की आजादी से लेकर आर्य समाज के प्रेरक आंदोलनों का वर्णन करते हुए बताया कि भारत राष्ट्र के उत्थान में गुरुकुलों का कितना बड़ा योगदान है। आर्य समाज ने किस प्रकार से विलुप्त हो गई गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना करके मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने का कार्य किया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और अध्यापकों, अधिकारियों के सामूहिक चित्र भी लिए गए। गुरुकुल के संचालक आचार्य मुकेश जी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज देवनगर (मुल्तान) के प्रांगण में

28वाँ आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा और उनकी शिक्षाओं के आधार पर ही आज देश और दुनिया उन्नति प्रगति के पथ पर अग्रसर है। महर्षि के ग्रंथों के स्वाध्याय से ज्ञात होता है कि आज के वैज्ञानिक जो नए शोध और खोज करते हैं, वेदों के आधार महर्षि दयानंद को वहां पहले से ही विराजमान पाते हैं। महर्षि दयानंद आधुनिक भारत के निर्माता, युग प्रवर्तक और मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने दूरदर्शी महामानव थे। अपने एक ओर समाज अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास से उबरने की राह दिखाई वहीं दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों को तर्क, युक्ति और प्रमाण की खड्ग से दूर भगाया। इस क्रम में महर्षि ने युवा स्त्री पुरुषों को गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार स्वेच्छा से विवाह हेतु जीवन साथी चुनने का संदेश दिया था, परिणाम स्वरूप पूरे देश और दुनिया में आज जाति वाद, ऊंच नीच, भेद भाव की दीवार को गिराकर युवा पीढ़ी उनकी आज्ञाओं को शिरोधार्य करके निरन्तर आगे बढ़ रही है। महर्षि की इसी भावना को साकार करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लंबे समय से आर्य परिवार विवाह योग्य युवक युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन करता आ रहा है। जिससे आर्य परिवारों की सुविधा को सुविधा पूर्वक वर वधु मिल रहे हैं और सबके घरों में खुशियां आ रही हैं। इस हेतु 9 फरवरी 2025, को आर्य समाज देव नगर, करोल बाग, न दिल्ली में 28वा आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य सतीश चड्डा-राष्टीय संयोजक ने उपस्थित आर्य महानुभावो का परिचय तथा पीत वस्त्र द्वारा स्वागत सम्मान करवाया। श्री अर्जुन देव चड्ढा जी, जिन्होंने यह परिचय सम्मेलन दिल्ली में आरंभ करवाया, को स्मरण तथा विनम्र श्रद्धा सुमन देते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ करवाया। प्रार्थना उपासना स्तुति मंत्रों के पश्चात, सर्वश्री सुशील बाली-प्रधान, राकेश बेदी- उपप्रधान, आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री, ओम प्रकाश गोयल - वैदिक विद्वान, नीलम गुप्ता- मंत्री, आर्य समाज देव नगर, आर्य सतीश चड्डा-राष्टीय संयोजक, अरुण प्रकाश वर्मा-उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, सुखवीर सिंह आर्य-मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वीना आर्य, विभा आर्य, रश्मि वर्मा, डां प्रतिभा नंद, संयोजक ने दीप प्रज्ज्वलित किया।

श्री सुशील बाली प्रधान आर्य समाज देव नगर ने वैदिक विचारधारा के अनुरूप स्वयंवर को विशेष महत्व दिया कि आज के युवक युक्ति अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप अपना जीवन साथी चुने, यही प्राचीन भारत की परंपरा थी और वर्तमान में आयोजित हो रहे सम्मेलनों का भी यहीं मुख्य लक्ष्य है। आदरणीय धर्मपाल आर्य, तेजस्वी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य की चर्चा करते हुए कहा कि आर्य समाज की विचार धारा में दहेज का कोई महत्व और स्थान नहीं है इस पर विशेष ध्यान आकर्षित किया। श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि देव दयानंद और वैदिक संस्कारों के कार्यवाहन करने हेतु इन सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है और किसी सीमा तक यह सम्मेलन सफल भी हो रहे हैं। हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए कि आज की युवा पीढ़ी आगे बढ़ने को प्रयासरत है और परिवार के संग इस कार्य को आगे बढ़ा रही है क्योंकि समान विचारधारा और गुण कर्म होने से जीवन सुखमय और उन्नतशील बनता है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ★ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ★

विवाह में स्त्री की पसन्द सर्वोपरी

स्वयंवर का प्रचलन:-
प्राचीन आर्य लोगों में स्वयंवर होता था अर्थात् कन्या स्वयं अपना वर पसन्द कर लेती थी। किन्तु इस समय के अनुसार विवाह नहीं होता था।

-पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी)

19

जन्मपत्री का कोई आधार नहीं है

जन्मपत्री बनवाना एक बहुत बड़ी रूढी और अंधविश्वास रहा है, आज भी कुछ हद तक तो है किंतु उस काल में इतने बड़े वर्ग के सामने इसका स्पष्ट विरोध करना।

"यह जन्मपत्र नहीं प्रत्युत शोकपत्र है। पण्डित सब किसी को खोटी दशा 66 के जप करने के लिए अवश्य कुछ न कुछ बतलाता है। बुद्धिमान् व्यक्ति ऐसी बातों को नहीं माना करते।"

-सर्वश्रेष्ठ प्रवचन

20

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

मुम्बई, लाहौर और दूसरे नगरों के आर्यसमाजी हमारी सभा के सभासद् हैं। परन्तु उनको सम्मिलित होने के लिए हमने नहीं कहा।

हमारे नियमों में आर्यसमाज से इतनी प्रतिकूलता है कि हम प्रत्येक सभ्य के धर्म की प्रतिष्ठा करते हैं। प्रत्येक मतावलम्बी को चाहे वह आर्यसमाजी हो, ईसाई हो अथवा मूर्तिपूजा हो, हम सभा में मिला लेते हैं।

इसी हेतु से मैंने आपको और दो-एक अन्य सज्जनों को सभा में भरती होने की सम्मति दी थी।

रही यह बात कि आर्यसामाजिक हममें मिलें या न मिलें, इसकी हमें परवाह नहीं। इसमें उन्हीं की और कदाचित् समाजों की हानि है।

पुलिस के सबसे बड़े अधिकारी हेण्डरसन महाशय सभा में सम्मिलित हुए हैं। इससे हमारा अभीष्ट सर्वथा सिद्ध हो गया। हमारी सभा में सम्मिलित होते हुए उन्होंने कहा कि मैं इसमें इसलिए मिलता हूं कि इससे बड़े-बड़े लाभ पहुंचे हैं। आप और अल्कॉट ने 18 मास में वह बात प्राप्त कर ली है जो हम अंग्रेज बहुत वर्षों में कभी नहीं कर पाए। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दुस्तानियों और अंग्रेजों के बीच जोखाई है, उसे आप भर रहे हैं। आपके कारण हम उनकी अधिक प्रतिष्ठा करने लगे हैं और वे हमसे घृणा छोड़ रहे हैं। वे हमारे काम की प्रतिष्ठा करते और उसे श्रेष्ठ समझते हैं। मुझे आशा है कि जैसे उनके विचार हैं, वे वैसा ही कर दिखाएंगे। परन्तु जब महर्षि जी का प्रसंग चला तो उन्होंने भी यह कहा कि थियोसॉफी के समान महर्षि जी की सम्मति नहीं है। उनके विचार अनिषेधक और उदार नहीं दिखते। आर्यसमाज ईश्वर को हर्ताकर्ता मानने वालों का एक जत्था है। ऐसी दशा में हम उनको भाइयों के सदृश क्यों मानें इत्यादि।

महर्षि जी ने इस पत्र का विस्तृत उत्तर भेजा। उस उत्तर के भी कुछ भाग उद्धृत किये जाते हैं-

प्रथम आप लोगों ने जैसा लिखा था, जैसा प्रथम समागम में विदित किया था, उसके अनुसार अब आपका वर्ताव कहां है?

वे पत्र छाप दिये गए हैं जिनमें आपने लिखा था कि हम संस्कृत अध्ययन करेंगे, और अपनी सभा को समाज की शाखा बना देंगे। जो पत्र मैंने आपके पास भेजे थे, उनकी नकल भी मेरे पास है। देखिये, थोड़े दिन हुए जब आपसे मेरठ में आर्यसमाज और थियासॉफी सभी के विषय में बातचीत हुई थी, उस समय मैंने सबके सामने क्या आपसे नहीं कहा था कि समाज के विषयों से सभा के नियमों में कुछ भी विशेषता नहीं है? यह बात मैंने बम्बई में भी पत्र द्वारा सूचित की थी। वैसे ही मैं अब भी मानता हूं कि आर्यसमाजस्थों को धर्मादिक विषयों के लिए सभा में मिलना उचित नहीं है।

अब विचारणीय विषय यह है कि ऐसी दशा में थियोसॉफी वालों को आर्यसमाज मैं मिलना चाहिए अथवा आर्यसमाजियों को उस सभा में? देखिये, मैंने अथवा किसी आर्य सभासद् ने आज तक किसी भी थियोसॉफिस्ट को आर्यसमाज का सभासद् बनाने का यत्न नहीं किया। आप अपने आत्मा में विचारिये कि आपने क्या किया और क्या कर रही हैं? आपने कितने ही आर्यसमाजियों को अपनी सभा में भर्ती होने के लिए प्रेरणा की। कई सज्जनों से सभासद् बनने का दस रुपये चन्दा भी लिया।

अन्य देशियों के समाज में भिन्नता और स्नेह वैसा कभी नहीं हो सकता, जैसा कि स्वदेशियों के समाज में होता है- यह बात मैंने उस समय कही थी, अब कहता हूं और आगे भी कहूंगा। परन्तु ऊपर की बात मैंने जिस प्रसंग पर कही थी वह यह है कि ''असिद्धं बहिरंगमन्तरंगे'' अर्थात् जिनका देश एक है, भाषा एक है, जन्म

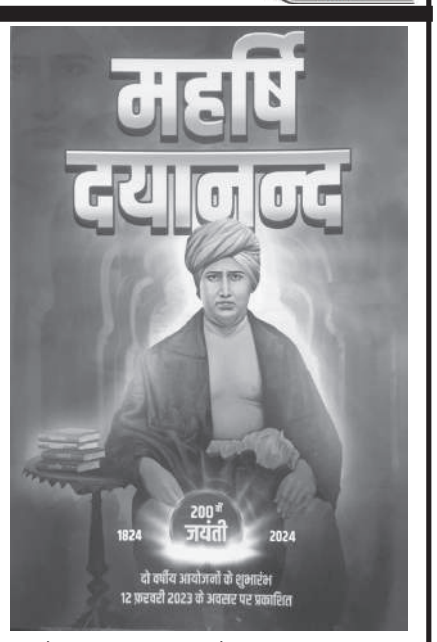

और सहवास एक है, जिनके विवाहादि सम्बन्ध परस्पर होते हैं, उनको परस्पर जितना लाभ होता है उनकी जितनी परस्पर प्रीति होती है, उतना लाभ और उन्नति भिन्न देशवासियों को भिन्न देशवासियों से नहीं हो सकती। देखिए, केवल भाषा का ही भेद होने पर मुझको और यूरोपियन महाशयों को परस्पर उपकार करने में कितनी कठिनाई होती है? -क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

The correspondence continued for some days. The effort of Madam Blavatsky and Colonel Alcott was to somehow trap the members of Arya Samaj in the clutches of Theosophy. On the one hand, denial of the Creator God by Theosophy, on the other hand, arrogance of miracles! The sage thought it necessary that the Arya men should be warned.

On Asauj Badi Chatur - dashi, Samvat 1937 it_ was the second anniversary of the Aryasamaj of Meerut. On the occasion of this festival two lectures were given by Shri Swamiji. In these lectures, he threw light on the reasons due to which the Arya Samaj was hindered when it separated from Theosophy and also declared that no Arya Samaj should become a disciple of Theosophy.

Many fundamental differences had arisen between both - (1) Theosophists did not believe in the creator God. (2) They called themselves Buddhists. (3) They used to believe in the existence of some imaginary Mahatmas in the Himalayas, and their secret messages. (4) They used to believe and claim miracles in the name of Siddhis. (5) Christians, Muslims, Buddhists, Hindus, all could have entered Theosophy believing in opposing principles. Thus Theosophy had gone far away from Aryasamaj.

This announcement had become necessary on the part of Rishi Dayanand, otherwise there was a great fear of destruction of Arya Samaj. Many Christians also joined Theosophy. Many of them were also state employees. The operators of Theosophy wanted Arya Samaj to be lured only by tempting the sympathy of the state employees, but that weapon also proved useless.

The announcement made by Rishi Dayanand in Meerut gave a big blow to the planned program of Colonel Alcott and Madam Blavatsky. They were thinking their that soon the entire Arya Samaj will come under our control and the theosophy, which was initially the school of the Arya Samaj, will Arya Samaj destroy.' The sage's lecture broke this sweet plan. At that time Madame Blavatsky was in Shimla. There she got the news of Swamiji's announcement. She was very upset and sent a letter to Babu Chhedilal ji of Meerut. The letter is very long, that's why only some of its essential quotes are being given here. The letter was in English, here is its translation-

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

28वाँ आर्य परिवार विवाह ....

राष्ट्रीय संयोजक आर्य सतीश चड्ढा ने जानकारी दी कि इस बार लगभग 75 युवक-युवतियों ने अपना पंजीकरण कराया है और यह इस पंजीकरण द्वारा उन्हें आने वाले 1 साल तक इस सेवा का निशुल्क लाभ मिलेगा। कुछ पंजीकृत बच्चों ने आपस में रुचि भी दिखाई तथा भविष्य हेतु आपस में विचार विमर्श भी किया। उन्होंने बताया कि आज के इस कार्यक्रम में, दूर-दूर से लगभग 75 पंजीकृत बच्चों के अभिभावक उपस्थित हैं तथा आर्य समाज का सभागार पूर्णतया भरा हुआ था। आर्य समाज देव नगर द्वारा सभी का चाय-नमकीन आदि से स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम के पश्चात भोजन की व्यवस्था की गई थी। हम आर्य समाज देव नगर के सभी अधिकारियों का तथा आए हुए आर्य सज्जनों परिवारों का धन्यवाद। सभी संयोजकों के साथ-साथ, आर्य मीडिया सेंटर, श्रीमती सुप्रिया, श्री राजवीर शास्त्री, संर्वधक वेद प्रकाश आर्य तथा अन्य सहायको का भी धन्यवाद।

- आर्य सतीश चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानंद के अनगिनत उपकार संपूर्ण मानव जाति के ऊपर हैं, उनसे उत्तीर्ण तो हम हो नहीं सकते किन्तु उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का भाव सबके मन मस्तिष्क में दृष्टिगत हो रहा था।

- बृहस्पति आर्य

विज्ञापन

सुयोग्य आर्य वर चाहिए

गुरुकुल चोटीपुरा एवं पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार से शिक्षित, राजस्थान-पाली जिलान्तर्गत प्रतिष्ठित ठाकुर घराने के आर्य परिवार की 25 वर्षीय, कद-5'3'', रंग-गोरा, एम.ए. (हिन्दी) एवं आर.ए.एस. की तैयारी में संलग्न आर्य कन्या के लिए आर्य परिवार के सुयोग्य, समकक्ष योग्यता, व्यवसायी/सेवारत, शुद्ध शाकाहारी, मद्यपान रहित, सजातीय वर की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें - **डॉ. आर्य नरेश हनुवंत देव सिंह** (महेचा ठाकुर)
आर्य राजमहल, मु. पो. - नाणा, तहसील-बाली,
जिला-पाली (राजस्थान) **मो.- 9928742068**

प्रथम पृष्ठ का शेष

हे ! सत्य के प्रकाशक, हे ! महर्षि .....

ज्ञात हो कि यह वह कालखंड था, जब भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, भारतवासी अकर्मण्य होकर पराधीनता को अपना भाग्य मानकर अपने गौरवशाली वीरता के इतिहास को भूल चुके थे, लोगों के ऊपर आलस्य प्रमाद इतना हावी हो चुका था कि –

अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे न काम
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।।

इस प्रकार की चार्वाक की नीति को अपनाने वाले लोग जातिवाद, ऊंच नीच, भेदभाव के कुचक्र में फंसकर अंग्रेजी हुकूमत को ही सर्वोपरि और उचित मानकर मूर्ति पूजा तक समिति होकर रह गए थे।

महर्षि ने समस्त विपरीत परिस्थितियों के विरुद्ध अलख जगाई, वेदज्ञान की पुनर्स्थापना की, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का पुनर्जागरण किया, ढोंग, पाखण्ड अन्धविश्वास और कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का अभियान चलाया, इसके लिए उन्होंने अनेकानेक क्रांतिकारी भाषण दिए, अनेकों शास्त्रार्थ किए, सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रंथों की रचनाएं की, देश की स्वतंत्रता के लिए स्वदेशी, स्वराज, स्वधर्म का सर्वप्रथम उदघोष किया, इसके लिए उनके ऊपर कई बार प्राण घातक हमले हुए, उन्हें जहर दिया गया उनके ऊपर जहरीले सांप फेंके गए, उन्हें ईंट, पत्थर मारे गए, उनका जगह-जगह अपमान और तिरस्कार किया गया, लेकिन इन संपूर्ण कुत्सित प्रयासों के बावजूद महर्षि दयानंद सरस्वती जी राष्ट्र और मानव कल्याण के मार्ग पर निडर होकर आगे बढ़ते गए। आपने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की, जिसकी आर्य समाज 150वीं वर्ष गांठ 29, 30 मार्च को मुंबई में पूरे हर्षोल्लास से मना रहा है और महर्षि के 201 वें जन्मोत्सव को पूरे देश और दुनिया में महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों का विशाल क्रम तो 12 फरवरी 2023 से प्रारंभ होकर वर्तमान समय तक भारत के कोने-कोने में और विदेशों में अनेक भव्य, विशाल, विराट आयोजनों के रूप में समारोह निरंतर चल रहे हैं, इन सब कार्यक्रमों में महर्षि दयानंद की प्रेरणा के अनुरूप यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना, समर्पण के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, वैचारिक क्रांति के लिए जन-जागरण के अभियान चल रहे हैं, सरल वैदिक साहित्य वितरित किया जा रहा है। विभिन्न ऐतिहासिक कार्यक्रमों जिनमें भारत और विश्व की महान विभूतियां महर्षि दयानंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रही हैं और महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर स्वयं को धन्य अनुभव कर रही हैं।

किन्तु संपूर्ण मानवजाति पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी के इतने अनगिनत उपकार हैं, कि हम जन्म जन्मांतरों तक भी उन्हें पूरी तरह से चुका नहीं सकते, जब हम उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व पर चिन्तन करते हैं तो ज्ञात होता कि महर्षि कैलाश पर्वत के सामान विशाल, विराट और अडिग थे, महर्षि को दुनिया का कोई पद, प्रतिष्ठा, धन, संपदा का प्रलोभन डिगा नहीं पाया, सारा जमाना उनका विरोधी था लेकिन उनके अदभुत धैर्य को, उनके उद्देश्य प्राप्ति के संकल्प को कोई हिला नहीं पाया, हर तरह के आंधी तूफान उनके सामने आए और चले गए, किन्तु महर्षि के सत्य के प्रकाश की शक्ति के सामने कोई टिक नहीं पाया, क्योंकि महर्षि दयानंद सच्चे ईश्वर भक्त थे, राष्ट्र के सच्चे उपासक थे, वैदिक धर्म के मसीहा थे, मानवता के पुजारी थे, वे प्रेम करुणा की प्रति मूर्ति थे, महान धर्मात्मा और दयालु थे, महर्षि जब तक जिए परोपकार के लिए जिए और जब 30 अक्टूबर 1883 को दीपावाली की संध्या बेला में संसार से विदाई ली तब अपने हत्यारे को अभयदान देकर एक नई मिसाल कायम कर गए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी को उनके 201वें जन्मोत्सव पर शत-शत नमन।

- आचार्य अनिल शास्त्री

पृष्ठ 3 का शेष

कि हमसे कोई भूल हो गई है किसी प्राकृतिक नियम का हमने जरूर कहीं-न-कहीं उल्लंघन किया है। जिसके परिणामस्वरूप हमें ऐसा दु:ख प्राप्त हुआ है।

आज के आपा-धापी एवं व्यस्त जीवन में इन्सान अपनी संस्कृति, सभ्यता और प्रकृति को भूलकर पाश्चात्य विषमताओं को अपनाकर अपने शरीर को रोगी बना रहा है। यह तो अंधकार का अनुकरण मात्र ही कर रहा है। आजकल इंसान उठने-बैठने में, सोने-जागने में, खाने-पीने में, चलने फिरने में, पढ़ने-लिखने में, हंसने और मुस्कराने में भी नाटक ही कर रहा है। इसको न तो शयन की फुरसत है और न जागरण की चिन्ता।

रामायण में एक प्रसंग आता है-भगवान श्रीराम जब वनवास में गए तब भरत अपने ननिहाल में थे। जिस समय भरत वापिस आए तो उन्होंने साकेत (स्वर्ग समान) नगरी में चहुं ओर मातम और मायूसी देखी। असलीयत से अंजान सभी लोगों ने यही समझा कि राम के वन जाने में कहीं न कहीं भरत का भी योगदान है। माता कौशल्या सहित सभी ने भरत को उपलम्भ देना प्रारम्भ किया। व्यथित हृदय भरत ने सभी को बहुत समझाने का प्रयास किया और जब कोई नहीं माना तो उन्होंने वहां पर बहुत विस्तृत भाषण द्वारा मानव मात्र को प्रेरणा प्रदान की थी।

बाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि भरत श्रेष्ठ ने अपने भ्राता मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के वन जाने की जानकारी से अनजान होने का प्रमाण देते हुए अनेक महावाक्य कहे। उन्होंने कहा-जिसने भी राघव को वन में भेजा हो उसे वह पाप लगे जो सुप्त अवस्था में बैठी हुई गाय को लात मारने वाले को लगता है, विश्वास घात करने वाले को लगता है, छल-कपट करने वाले को लगता है और उन्होंने प्रकृति की उपासना का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह भी कहा था-

उभे संध्ये शयानस्य यत पापं परिकल्पयते।
तच्च पापं भवेत तस्य यस्यार्योऽक्रनुमतेगतः।।

जिसके कथन से भैया श्रीराम को वन में भेजा गया हो, उसे वही पाप लगे जो दोनों संध्याओं के समय अर्थात् सूर्योदय के समय और सूर्यासत के वक्त सोए हुए पुरुष को प्राप्त होता है।

वस्तुत: यह परमसत्य है कि जो लोग सूर्योदय होने के समय या उसके बाद तक सोते हैं उनको बहुत बड़ा पाप लगता है। इसके विपरीत जो सूर्यास्त के समय सायंकालीन बेला में सोए पड़े होते हैं उनको भी प्रकृति दण्डित करती है। लेकिन आज जैसे देर से सोना और देर से उठना एक फैशन सा बन गया है।

प्रभात में प्रकृति अमृत लुटाती है। जो लोग उस अमृत बेला में जागृत होते हैं वे अमृतकण प्राप्त करते हैं। उनका जीवन उत्साह, उमंग, उल्लास और खुशियों से परिपूर्ण होता है, आनन्दित होता है। और जो आलस्य में पड़े रहते हैं सोए रहते हैं उन्हें उदासी, निराशा तथा दु:ख, दारिद्रय प्राप्त होता है। शतपथ ब्राह्मण का कथन है-

कलि: श्यानो भवति संजिहानस्तु द्वापर:।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन।।

अर्थात् जब मनुष्य सोया रहता है तो वह उसके जीवन का कलियुग होता है, जंभाई लेने का नाम द्वापर है, उठकर खड़े होने का त्रेता और उठकर चल पड़ने का नाम सतयुग है।

अत: प्रकृति हर जगह शिक्षा दे रही है। एक तरफ ऊंचे पहाड़-शिखर हैं, जो दृढ़ निश्चय के, ऊंचाई के प्रतीक हैं। दूसरी तरफ खाइयां हैं। प्रकृति का यह रूप दर्शाता है कि निराशा की गहरी खाइयों से निकलकर ऊंचें-ऊंचे शिखरों को छूने का सतत् प्रयास करो। जीवन में सद्गुण ग्रहण करने वाले बनो। जहां से भी कोई गुण मिले उसे अपने जीवन में धरण करो। प्रभु से प्रार्थना करते हुए यही कहना कि हे प्रभु! सम्पूर्ण प्रकृति सजी हुई है, मैं भी अपने जीवन के गुलदस्ते को सजाकर रख सकूं, मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करना।

शोक समाचार

श्रीमती शशि गुप्ता जी का निधन

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज - आर्यसमाज हौजखास की प्रधाना श्रीमती शशि गुप्ता जी का 4 फरवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ-श्रद्धांजलि सभा 7 फरवरी, 2025 को आर्य ऑडिटोरियम, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली में में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, केन्द्रीय सभा एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एंव सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती कुसुमलता पुलयानी जी का निधन

आर्यसमाज तिलक नगर के पूर्व अधिकारी स्व. श्री बलदेव राज आर्य जी की धर्मपत्नी एवं आर्यसमाज महावीर नगर के प्रधान श्री यशपाल आर्य जी की भाभी श्रीमती कुसुमलता पुलयानी जी का दिनांक 10 फरवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 11 फरवरी को तिलक विहार शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ-श्रद्धांजलि सभा 13 फरवरी, 2025 को आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा एवं निकटवर्ती अन्य अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एंव सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती अंजू बजाज जी का निधन

आर्यसमाज कस्तूरबा नगर की पूर्व प्रधान एवं आर्यसमाज डिफेंस कालोनी की कर्मठ सदस्या श्रीमती अंजू बजाज जी का 7 फरवरी, 2025 को उनके बेटी के बैंगलोर निवास पर आकस्मिक निधन हो गया। वहीं उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 फरवरी को आर्यसमाज डिफेंस कालोनी में सायं 4 से 5:30 बजे सम्पन्न होगी।

पं. जगदीश प्रसाद शर्मा जी का निधन

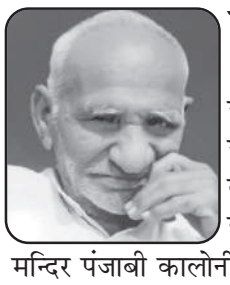

आर्यसमाज के भजनोपदेशक एवं आर्य नरेला के साथ जुड़कर पुरोहित कार्य करने वाले पं. जगदीश प्रसाद शर्मा जी का 30 जनवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ थे।उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ-श्रद्धांजलि सभा 10 फरवरी, 2025 को सनातन धर्म मन्दिर पंजाबी कालोनी नरेला में हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एंव सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

⑧ साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 10 फरवरी, 2025 से रविवार 16 फरवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 13-14-15/02/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 फरवरी, 2025

ओ३म्

150वां आर्य समाज स्थापना दिवस, मुंबई

29-30 मार्च 2025, स्थान: सिड्को, वाशी, मुंबई

प्रतिष्ठा में,

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति की बैठक 1 फरवरी, 2025 के निर्णयानुसार मुम्बई यात्रा का विवरण

यात्रा एवं कार्यक्रम : 27 मार्च से 1 अप्रैल, 2025

कृपया अपने रेल/विमान की टिकटें जल्दी कराएं

रेलवे यात्रा : 27 मार्च 2025 : प्रस्थान - नई दिल्ली
28 मार्च 2025 : प्रातः मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं एवं रात्रि मुंबई से
1 अप्रैल 2025 : वापसी दिल्ली पहुँचना

हवाई यात्रा : 28 मार्च 2025 : प्रातः दिल्ली से प्रस्थान मुंबई पहुँचना एवं भ्रमण
29-30 मार्च 2025 : कार्यक्रम में भागीदारी
31 मार्च 2025 : भ्रमण एवं प्रस्थान - सायं, रात्रि मुंबई से
: तथा दिल्ली पहुँचना

★ रेल/हवाई यात्रा/भ्रमण में रास्ते की सभी व्यवस्थाएं सदस्य को स्वयं करनी होगी।
★ मुंबई पहुंचने पर आवास (दो सदस्यों की भागीदारी में), भोजन तथा भ्रमण की व्यवस्था रहेगी।
★ सदस्य शीघ्र अति शीघ्र पंजीकरण तथा राशी जमा करवाएं। वरना रेलवे टिकट नही मिलेगी लिंक अथवा QR कोड स्कैन करें।
★ रेल बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9811227215
★ विमान बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र : 9831067332

bit.ly/150sthapnadiwas

★ बुकिंग कैंसिल होने पर पैसा वापिस नहीं किया जायेगा।
★

रेल यात्रा	रेल टिकट	आवास व्यय	भ्रमण इत्यादि	कुल व्यय
साधारण स्लीपर	1500	2000 (धर्मशाला, भवन)	2000	5500
गरीब रथ एसी	2500	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	10550
3 एसी	5300	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	13300
2 एसी	7200	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	15200
हवाई यात्रा	सुविधानुसार	6000 (एसी बेडरूम अटैच्ड बाथरूम)	2000	8000

★ आवास एवं भ्रमण हेतु संपर्क सूत्र : 9811129892 (प्रातः 10-1 बजे/सायं 4-7 बजे)

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120, प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250, प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300, प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह